गुरु नानक – सबद ५४

ध्रिग जीवण दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १८

ध्रिग जीवण दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥
कलर केरी कंध जिउ अहिनिस किर ढहि पाइ ॥
बिन सबदै सुख ना थीऐ पिर बिन दूख न जाइ ॥१॥
मुंधे पिर बिन किआ सीगार ॥
दर घर ढोई न लहै दरगह झूठ खुआर ॥१॥ रहाउ ॥
आप सुजाण न भुलई सचा वड किरसाण ॥
पहिला धरती साध कै सच नाम दे दाण ॥
नउ निध उपजै नाम एक करम पवै नीसाण ॥२॥
गुर कउ जाण न जाणई किआ तिस चज अचार ॥
अंधुलै नाम विसारिआ मनमुख अंध गुबार ॥
आवण जाण न चुकई मर जनमै होइ खुआर ॥३॥
चंदन मोल अणाइआ कुंगू मांग संधूर ॥
चोआ चंदन बहु घणा पाना नाल कपूर ॥
जे धन कंत न भावई त सभ अड्मबर कूड़ ॥४॥
सभ रस भोगण बाद हहि सभ सीगार विकार ॥
जब लग सबद न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआर ॥
नानक धंन सुहागणी जिन सह नाल पिआर ॥५॥१३॥

सार: इस सबद में गुरु नानक एक बंद दरवाजे की उपमा देते हैं, जो हमें घर के आराम से वंचित रखता है। इसका अर्थ है कि झूठे मोह और भ्रम में फंसे रहने से हम दिव्य सत्य तक नहीं पहुँच सकते। हम अपने मन को खोल और इन भ्रामक धारणाओं से ऊपर उठ कर "नव निधियां" (नौ ख़ज़ाने) प्राप्त कर सकते हैं। ये नौ गुण आध्यात्मिक और सांसारिक सुख के लिए आवश्यक माने जाते हैं जैसे कि—सच्चाई, बुद्धि, संवाद क्षमता, रचनात्मकता, धैर्य, आत्मज्ञान, सुरक्षा, उच्च

उद्देश्य और जीवनयापन के लिए आवश्यक संसाधन। इन गुणों पर ध्यान केंद्रित करने से हमें सद्भाव से रहने का मार्गदर्शन मिलता है।

ध्रिग जीवण दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥
जो अभागे मनुष्य द्वैत मोह के कारण भ्रमित हो जाते हैं, उनका जीवन व्यर्थ माना जाता है।

कलर केरी कंध जिउ अहिनिस किर ढहि पाइ ॥
वह खारी मिट्टी की दीवार की तरह हैं, जो धीरे-धीरे गलकर गिर जाती है।

बिन सबदै सुख ना थीऐ पिर बिन दूख न जाइ ॥१॥
ज्ञान के सार को अपनाए बिना, किसी को सुकून नहीं मिल सकता। सर्वव्यापी एकता के प्रति प्रेम के बिना कोई भी दुख से उबर नहीं सकता। (१)

मुंधे पिर बिन किआ सीगार ॥
अगर आत्मज्ञान रूपी साथी ही न हो, तो बाहरी धार्मिक अलंकरण की सजावट का क्या मूल्य है?

दर घर ढोई न लहै दरगह झूठ खुआर ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे बंद दरवाजे के कारण घर का आराम पहुंच से बाहर हो जाता है। वैसे ही असत्य के प्रभाव के मोह में फंसने से आध्यात्मिक आनंद नहीं मिल सकता। (१)(विराम)

आप सुजाण न भुलई सचा वड किरसाण ॥
सर्वयापी ऊर्जा में अनंत ज्ञान है और वह कोई ग़लती नहीं करती; यह एक किसान की तरह सृष्टि का पोषण करती है।

पहिला धरती साध कै सच नाम दे दाण ॥
जैसे खेती के लिए पहले मिट्टी तैयार करनी होती है,जुताई होती है, वैसे ही सत्य को अपनाने के लिए मन को भी आत्म-चिंतन की शुद्धी की आवश्यकता होती है।

नउ निध उपजै नाम एक करम पवै नीसाण ॥२॥
इस आत्मिक प्रयास से नव निधियां (नौ गुण) प्राप्त होते हैं, जो आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि लाते हैं। (२)

गुर कउ जाण न जाणई किआ तिस चज अचार ॥
ज्ञान की शक्ति को जानते हुए भी यदि कोई उसे समझने का प्रयास नहीं करता, तब मात्र व्यवहार और शिष्टाचार का कोई महत्व नहीं रह जाता।

अंधुलै नाम विसारिआ मनमुख अंध गुबार ॥
जिनके पास दर्शन की कमी है वह आत्म-चिंतन करना छोड़ देते हैं, जबकि जो लोग अपनी इच्छाओं से त्रस्त हैं वह अज्ञानता की छाया में अपने ही भ्रम में फंसे रहते हैं।

आवण जाण न चुकई मर जनमै होइ खुआर ॥३॥
वह स्वयं को अच्छे और बुरे के द्वंद्व से मुक्त नहीं कर पाते जिससे उन्हें अपने आध्यात्मिक विकास और गिरावट के संघर्षों की पीड़ा सहन करनी पड़ती है। (३)

चंदन मोल अणाइआ कुंगू मांग संधूर ॥
महंगा चंदन खरीदकर, उत्तम केसर लगाकर और मांग को सिंदूर से सजा कर।

चोआ चंदन बहु घणा पाना नाल कपूर ॥
चंदन का तेज़ इत्र लगा कर और कपूर मिला पान चबा कर।

जे धन कंत न भावई त सभ अड्मबर कूड़ ॥४॥
यदि यह बाहरी सजावटें चेतना रुपी प्रिय साथी को प्रसन्न नहीं करती हैं तो बेकार हैं। इसका अर्थ है कि सच्ची ख़ुशी आंतरिक संतुष्टि से आती है, दिखावे से नहीं। (४)

सभ रस भोगण बाद हहि सभ सीगार विकार ॥
भौतिक सुख-संपत्ति में उलझना और बाहरी साज-सज्जा अंततः व्यर्थ हैं।

जब लग सबद न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआर ॥
जब तक ज्ञान के सार में डूबा नहीं जाता तब तक आंतरिक सुंदरता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

नानक धंन सुहागणी जिन सह नाल पिआर ॥५॥१३॥
नानक कहते हैं कि वह धन्य हैं जो सर्वव्यापी चेतना से प्रेम करते हैं और उसे अपनाते हैं। (५)(१३)

तत्त्व: गुरु नानक इस गहन सत्य पर प्रकाश डालते हैं कि बाहरी दिखावे, भौतिक संपत्ति या सतही सजावट का कोई स्थायी मूल्य नहीं है जब तक कि वह अधिक गहन आंतरिक संतुष्टि के साथ जुड़े न हों। सच्चा खजाना इसमें नहीं है कि हम क्या जमा करते हैं या दुनिया हमें कैसे देखती है, बल्कि हमारी चेतना में है और सर्वव्यापी ऊर्जा के परम सत्य के साथ संबंध में है। जो लोग इस वास्तविकता को समझते हैं वह असल में धन्य हैं।

पहलकदमी
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com